डा॰ किरण माला

एसोशिएट प्रोफेसर

संस्कृत विभाग

मगध महिला कॉलेज

शिवराज विजय का संछिप्त परिचय

शिवराजविजय ऐतिहासिककाव्य–

शिवराजविजय की कथावस्तु

ऐतिहासिक है। इसका कथानक इतिहास

प्रसिद्ध महाराष्ट्र शिरोमणि शिवाजी की दस वर्षो की जीवनी पर आधरित है। इसका कथानक मातृभूमि के प्रति प्रेम राजा की प्रजावत्सलता प्रजा की राजभक्ति धर्मिकता तथा राष्ट्रीय भावनाओं से ओत–प्रोत है। इन नवीन भावनाओं का प्राचीन संस्कृत साहित्य में नितान्त अभाव था। पं॰ अम्बिकादत्त व्यास ने ऐसे समय में शिवराजविजय लिखकर राष्ट्रीय प्रेम से परिपूर्ण महाराज शिवाजी का पावन आदर्श हमारे सम्मुख रखा था।

साहित्याचार्य पं॰ अम्बिकादत्त व्यास ने शिवराजविजय नामक गद्य काव्य की रचना की, जो काशी में 2902 ई॰ प्रकाशित हुआ। शिवराजविजय वीर रस प्रधन काव्य है। तथापि उपकारी रूप में रसों का चित्राण है। इस कृति में प्राचीन गौरव की भी घोषणा की गई है। 'अस्मित्रोव' भारतवर्षे यायजूकैः राजसूयादियज्ञाः व्याजिषत। कदाचिदिदैव वर्षावातातातपहिमसंहानि तथापि अतापिषत बाण के हर्षचरित की भांति शिवराजविजय का कथानक भी हमें समय की गतिविधि से परिचित कराता है।

लेखक का परिचय

आधुनिक संस्कृत–रचनाकारों में सर्वाध्कि ख्यातिप्राप्त एवं अलौकिक प्रतिभा सम्पन्न साहित्याचार्य श्री अम्बिकादत्त व्यास ही है। व्यास जी का स्थितिकाल ;1858–1900द्ध ई॰ था। पं॰ अम्बिकादत्त व्यास के पिताजी का नाम दुर्गादत्त था। इनके पूर्वज जयपुर राज्य के निवासी थे। इनके पितामह काशी में आकर बस गये थे। यह आरंभ से हीं धर्मिक विचारों के व्यक्ति थे। संस्कृत व हिन्दी में इनकी विशेष रूची थी। इनका विवाह 13 वर्ष की अल्पायु में ही हो गया। पं॰ व्यास जी के पिताजी कवि विद्वान और व्यवहार कुशल व्यक्ति थे। अतः उन्होंने व्यास जी का बाल्यकाल से अक्षराक्क के साथ ही उन्हें अमरकोष शब्दधतुरूपावली और

व्यावहारिक पदार्थो के संस्कृत नाम मौखिक रूप से कंठस्थ कराने प्रारंभ कर दिये। इनके 11 वर्ष की अवस्था में माता का तथा 19वें वर्ष में पिता का देहान्त होने से व्यास जी पर गृहस्थी का भार आ पड़ा। संवंत 1937 में गर्वर्नमेंट संस्कृत कॉलेज से साहित्याचार्य की परीक्षा उत्तीर्ण करके 1940 में एक संस्कृत पाठशाला के प्राधनाचार्य के पद पर कार्य करने लगे। कुछ दिन बाद वहाँ से त्याग पत्रा देकर मुजफ्रपफरपुर चले गये, जिला स्कूल के प्रधनपण्डित के पद पर कार्य करने लगे। व्यास जी अप्रत्तिम प्रतिभाशाली थे। व्यास जी हिन्दी, संस्कृत, अंग्रेजी और बांग्ला भाषा के ज्ञाता थे। न्याय व्याकरण, वेदान्त और दर्शन में इनकी अच्छी गति थी। कविता कला में इतने प्रवीण थे कि एक घड़ी में क्यों श्लोकों की रचना कर सकते थे। सौ प्रश्नों का एक साथ सुनकर उन सभी का उत्तर उसी क्रम में देने की अद्‌भुत क्षमता थी। इसलिए इन्हें ''शता वधन तथा घटिका शतक की उपाधि मिली थी''।

कथावस्तु –

'शिवराजविजय' का कथानक तीन विरामों में विभक्त है। प्रत्येक विरामों में चार निःश्वास है। संक्षेप में कथानक इस प्रकार है।

दक्षिण में मुसलमानों के अध्पित्य तथा अत्याचारों से खिन्न शिवाजी ने स्वतंत्राता के लिए संघर्ष प्रारंभ किया। उस काल में दो–दो कोस पर आश्रम बने हुए थे। जो मुसलमानों की गतिविध् िका परिचय रखते थे। शिवाजी की निरन्तर विजयों से उ(ि्न होरि बीजापुर– दरबार ने उनसे यु(करने के लिए अपफजल खाँ को भेजा। उस समय शिवाजी प्रताप दुर्ग में थे। अपफजल खाँ ने भी वही भीमा नदी के तट पर शिविर डाल दिया। बीजापुर के शासक स ि संध् िका धेखा करके शिवाजी को जीवित पकड़ना चाहते थे। किन्तु उनकी इस अभिसंध् िका शिवाजी को पता लग गयी। एक यवन गुप्तचर बीजापुर दरबार का पत्रा ले जा रहा था। मार्ग में उसने एक ब्राह्मण कन्या का अपहरण किया। किन्तु वह कन्या एक आश्रम के अध्यक्ष ब्रह्मचारी गुरू के शिष्यों– गौरसिंह और श्यामसिंह द्वारा बचा ली गई। यवन गुप्तचर गौरसिंह द्वारा मारा गया तथा बीजापुर का गुप्त संदेश उसके वस्त्राों में से गौरसिंह को प्राप्त हुआ।

इस गुप्त संदेश को जानकर शिवाजी ने स्वयें अपफजल खाँ को छलने की योजना बनाई। बीजापूर के दरबार स सन्ध् िप्रस्ताव लेकर भेजे गये, पं॰ गोपीनाथ द्वारा प्रताप दुर्ग की तलहरी में अपफजल खाँ से मिलने का शिवाजी ने प्रबन्ध् किया। गौर सिंह भी गायक के वेश में अपफजल खाँ के शिविर में जाकर सम्पूर्ण षडयंत्रा

का भेद निकाल लाया। शिवाजी ने अपनी सेना चारों ओर जंगल में तथा अपफजल खाँ के शिविर के आस–पास छिपा दी। प्रातः काल अपफजल खाँ शिवाजी से मिलने आया। शिवाजी अपने कपड़ों के अन्दर कवच और हाथों में बाघनख नाम का हथियार पहन कर गये। परस्पर आलिंगन करने पर शिवाजी ने अपफजल खाँ के कन्धें और गर्दन को पफाड़कर उसे पटक दिया।

तथा उनकी सेना ने मुसलमानी सेना को मार कर भागा दिया।

गौर सिंह द्वारा जिस ब्राह्मण कन्या की रक्षा की गयी थी उसके संरक्षक एक ब्राह्मण थे। उनके आने पर रहस्योद्घाटन हुआ कि वह कन्या गौरसिंह और श्यामसिंह की बहन सौर्वणी है तथा उनके पुरोहित देव शर्मा है। तदन्तर ब्रह्मचारी गुरू के अनुरोध पर गौरसिंह ने अपना वृतान्त सुनाया।

वे उदयपुर के जागीदार खड़गसिंह के पुत्रा है। माता–पिता की मृत्यु के बाद तीनों बहिन भाई पुरोहित की संरक्षकता में रहते थे। एक बार शिकार खलन जाकर दोनों भाई लुटेरों द्वारा पकड़े गये। किसी भुक्ति से वे घोड़ों पर चढ़कर भाग निकले और एक हनुमान मंदिर के अध्यक्ष की सहायता से महाराष्ट्र पहुँचे ।

यहाँ भीमा नदी के किनारे उनकी शिवाजी से भेंट हुई और वे उस आश्रम में रहने लगे।

शाइस्ताखाँ पूना पर अध्किार करके वही शिवाजी के महलों में रहने लगा था। शिवाजी का उससे युद्ध अनिवार्य हो गया। शिवाजी ने सिंह दुर्ग में अपना एक संदेश रघुवीर सिंह द्वारा तोरण दुर्ग के अध्यक्ष के पास भेजा। आँधी–पानी की उपेक्षा करता हुआ। वह तोरण दुर्ग पहुँच कर दुर्गाध्यक्ष की आज्ञा से हनुमान मंदिर में ठहरा ।

इसी मन्दिर में देव शर्मा सौवर्णी को साथ लेकर रहने लगे थे। मन्दिरा की वटिका में गाना गाती हुईं सौवर्णी को देखकर रघुवीर सिंह के ह्रदय में उसके प्रति अनुराग की भावना जागृत हुई। शिवाजी के आदेश के अनुसार रघुवीर सिंह शाइस्ता खाँ के साथ होने वाले युद्ध के भविष्य को पूछने के लिए देव शर्मा के पास गया। देव शर्मा ने सौवर्णी द्वारा उसे एक मोदक खिलाकर गले में एक माला डलवाई और प्रातः काल आकर रात्रि में देखे गये स्वप्न का वृतान्त सुनाने के लिए कहा। प्रातः काल दुर्गाध्यक्ष से संदेश का उत्तर लेकर वह देवशर्मा के पास गया और यवनों के साथ युद्ध में विजय तथा आर्यों के साथ युद्ध में पराजय यह भविष्य जानकर वाटिका में गया। वाटिका में उसकी पुनः सौवर्णी से भेंट हुई। तदनन्तर वह हनुमान जी का प्रसाद लेकर सिंह दुर्ग की ओर चल पड़ा।

एक बार शिवाजी पण्डित के वेश में माल्यश्रीक के साथ शाइस्ता खाँ के निवास पूना जाकर गुप्त रूप से वहाँ का निरीक्षण कर आये और सन्देह करने पर पीछा करने वाला चाँद खाँ, शिवाजी के द्वारा मारा गया। शिवाजी ने यशवन्त सिंह को पूना से दूर रहने के लिए अनुरोध करके कुछ चुने हुए साथियों के साथ बारात के बहाने पूना में प्रवेश किया । याइस्ता खाँ के निवास पर आक्रमण कर दिया। चाँद खाँ और शाइस्ता खाँ के पुत्रा रघुवीर सिंह द्वारा मारे गये ।

शाइस्ता खाँ अपनी घायल उँगली के साथ खिड़की से कूदकर बाहर भाग गया। दूसरी ओर इसके पूर्व ही रघुवीर सिंह ने औरंगजेब की पुत्राी रोशनआरा को गिरफ्रतार कर लिया था।

एक समय ब्रह्मचारी गुरू ने गौरसिंह से अपना और अपने पुत्रा वीरेन्द्र सिंह का पूर्व वृतान्त बतलाया उध्र रघुवीर सिंह की प्रेयसी सौवर्णी ने कूरसिंह द्वारा किये जाने वाले अपने अपमान की बात बतलाई। तभी संयोगवश करूसिंह की नियुक्ति अन्यत्रा हो गई और उसका कष्ट दूर हो गया।

इध्र रोशनआरा अपना प्रेम शिवाजी से प्रकट कर रही थी, किन्तु उन्होंने कह दिया कि वे उसे पिता द्वारा दिये जाने पर ही स्वीकार

कर सकते है। तभी जयसिंह ने सैन्य–आक्रमण कर दिया। श्खिवाजी ने उसके मन में हिन्दुत्व की भावना जाग्रत करने का प्रयास किया, परन्तु इसपफल रहने पर कुछ कारणों से उसने मुगलों की कुछ शर्तें मानकर सन्धि करने को विवश हुए। इसी सन्धि के अनुसार रोशनआरा और मुअज्जम को वापस कर दिया।

तदन्तर बीजापुर के एक किले पर आक्रमण करके रघुवीर सिंह की सहायता से शिवाजी ने विजय प्राप्त की और रहमत खाँ कोजीवित पकड़ लिया। परन्तु रहमत खाँ और कूरसिंह द्वारा रघुवीर सिंह को राजद्रोही बतलाये जाने पर शिवाजी न उसे निष्कासित कर दिया। बाद में ज्ञात हुआ कि राजद्रोही वास्तव में कूरसिंह ही था।

अपमानित रघुवीर सिंह राधस्वामी का वेष धरण कर शवाजी का उपकार करता रहा और सौवर्णी के अपहरण करने की इच्छा वाले कूरसिंह का वध कर दिया। जयसिंह की सन्धि के अनुसार 1666 में औरंगजेब के दरबार दिल्ली में उपस्थित हुए। मार्ग में राधस्वामी ;रघुवीर सिंहद्ध के कई बार रोकने का प्रयास करने पर भी शिवाजी नहीं माने ।

दरबार में उपस्थित होने के अनन्तर औरंगजेब ने शिवाजी को नजरबन्द करवा दिया और मकान के चारों ओर पहरा बैठा दिया। परन्तु स्वयं की योजना तथा

रघुवीर सिंह के सहयोग से शिवाजी अपने साथियों के साथ भाग निकलने में सपफल हो गये ।

तदन्तर यह जानकर कि राधस्वामी ही रघुवीर सिंह है। शिवाजी ने क्षमा याचना कीं इसके बाद रघुवीर सिंह भी शिवाजी के साथ वापस लौट जाता है। उसे मण्डलेश्वर पद प्रदान किया गया तथा सौवणी के साथ उसका विवाह सम्पन्न हुआ। शिवाजी ने विवाह में सम्मिलित होकर आशीर्वाद प्रदान किया। उध्र दूतों ने सूचना दी कि सन्धि में मुगलों को दिये गये सभी किले जीत लिए गये है।

बाद में शिवाजी सतारा नगरी को राजधनी बनाकर रहने लगे और धीरे–धीरे कुछ ही दिनों में सम्पूर्ण महाराष्ट्र पर शिवाजी का अध्किार हो गया तथा औरंगजेब द्वारा प्रेषित सेनापति मोहम्मद खाँ भगा दिया गया।

,,,,